सूरह — एक कहानी

सूरह अल-इस्रा

रात का सफ़र

पूरा सफ़र — इज़्ज़त की रात पर दिए गए अहकाम —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 17 • 111 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

सुब्हानल्-लज़ी अस्रा बि-'अब्दिही लैलम्-मिनल्-मस्जिदिल्-हरामि इलल्-मस्जिदिल्-अक़्सा
1. पाक है वो जो अपने बंदे को रात को मस्जिद-ए-हराम से मस्जिद-ए-अक़्सा ले गया।

व क़ज़ा रब्बुक अल्ला तअ्बुदू इल्ला इय्याहु व बिल्-वालिदैनि इह्साना
23. और तेरे रब ने फ़ैसला कर दिया कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो और माँ-बाप से हुस्न-ए-सुलूक करो।

व ला तक़ुल्-लहुमा उफ़्फ़िंव्-व ला तन्हर्हुमा व क़ुल्-लहुमा क़ौलन करीमा
23. और उन्हें 'उफ़' तक मत कहो और न झिड़को, और उनसे इज़्ज़त वाली बात कहो।

व ला तक़्फ़ु मा लैस लक बिही 'इल्म
36. और उस चीज़ के पीछे मत पड़ो जिसका तुम्हें इल्म नहीं।

व नुनज़्ज़िलु मिनल्-क़ुरआनि मा हुव शिफ़ा-उंव्-व रहमतुल्-लिल्-मुअ्मिनीन
82. और हम क़ुरआन में से वो उतारते हैं जो मोमिनीन के लिए शिफ़ा और रहमत है।

व क़ुल जा-अल्-हक़्क़ु व ज़हक़ल्-बातिल; इन्नल्-बातिल काना ज़हूक़ा
81. और कहो: हक़ आ गया और बातिल मिट गया; बेशक बातिल मिटने वाला ही है।

पाक है वो जो अपने बंदे को रात को ले गया

बेटा, ये सूरह एक ही आयत से खुलती है जो इंसानी तारीख़ की सब से ग़ैर-मामूली रातों में से एक बयान करती है — और इसे समझने के लिए आपको जानना होगा कि ये कौनसा साल था।

नबी ﷺ अभी अपनी ज़िंदगी का सब से मुश्किल दौर गुज़ार चुके थे। उनके चचा अबू तालिब, जिन्होंने उनकी हिफ़ाज़त की थी, वफ़ात पा चुके थे। उनकी बीवी ख़दीजा (रज़ि0), जिन्होंने पच्चीस साल उन्हें तसल्ली दी थी, वफ़ात पा चुकी थीं। उलमा इसे **ग़म का साल** कहते हैं। वो मदद की तलाश में ताइफ़ गए और उन्हें पत्थरों के साथ भगा दिया गया।

और ये उस सब के **बाद** था, बेटा, कि अल्लाह ने उन्हें इस रात से नवाज़ा।

'**सुब्हानल्-लज़ी अस्रा बि-'अब्दिही लैलम्-मिनल्-मस्जिदिल्-हरामि इलल्-मस्जिदिल्-अक़्सल्-लज़ी बारक्ना हौलहू** — **पाक है वो जो अपने बंदे को रात को मस्जिद-ए-हराम से मस्जिद-ए-अक़्सा ले गया, जिसके आस-पास को हमने बरकत दी** — **लि-नुरियहू मिन आयातिना** — **ताकि हम उसे अपनी निशानियाँ दिखाएँ** — **इन्नहू हुवस्-समी'उल्-बसीर** — बेशक, वही सुनने वाला, देखने वाला है।'

बेटा, उनकी इज़्ज़त की बुलंदी पर उन के लिए इस्तेमाल हुआ लक़ब ग़ौर कीजिए: "अब्दिही' — **उसका बंदा**। 'उसका रसूल' नहीं, 'उसका महबूब' नहीं। **अपनी ज़िंदगी की सब से अज़ीम रात पर, उन्हें बंदा कहा जाता है। क्योंकि एक मख़्लूक़ के लिए ये सब से बुलंद चीज़ है।**

और बेटा, ग़ौर कीजिए उस सफ़र पर क्या हुआ: उन्होंने अक़्सा में अंबिया की इमामत की, और उन्हें आसमानों के ऊपर उठाया गया, और **पाँच वक़्त की नमाज़** दी गई — वो वाहिद फ़र्ज़ जो सीधा, आसमानों के ऊपर, बिना किसी फ़रिश्ते के लाए दिया गया।

बेटा, उस वक़्त के बारे में सोचिए। अपनी ज़िंदगी के सब से बुरे साल के बाद, उन्हें एक सफ़र पर ले जाया गया और **नमाज़** दी गई। जब एक शख़्स अपनी सब से निचली हालत में होता है, अल्लाह ने उन्हें दिन में पाँच बार उसके सामने खड़े होने का तरीक़ा दिया। **ये आपको बताता है कि नमाज़ इसी लिए है।**

और बेटा, उस रात के बारे में एक और बात। जब उन्होंने सुब्ह मक्का वालों को बताया, बहुत से ने मज़ाक़ उड़ाया। वो अबू बक्र (रज़ि0) के पास गए इस उम्मीद में कि वो अपने दोस्त को छोड़ देंगे, और उन्होंने कहा: **अगर उन्होंने ये कहा है, तो ये सच है।** और उस दिन से उन्हें अस्-सिद्दीक़ कहा गया, वो जो सच की तस्दीक़ करता है।

सूरह फिर बनी इस्राईल को याद करती है, और ज़मीन में फ़साद के दो मौक़ों और उन के नतीजे से ख़बरदार करती है — और वो उसूल बयान करती है जो उस सब पर हुक्मरानी करता है: '**इन अह्सन्तुम अह्सन्तुम लि-अन्फ़ुसिकुम व इन असअ्तुम**

फ़-लहा — अगर तुम भलाई करो तो अपने ही लिए करते हो; और अगर तुम बुराई करो तो वो भी अपने ही लिए।'

और फिर: '**इन्न हाज़ल्-क़ुरआन यह्दी लिल्लती हिय अक़्वम — बेशक, ये क़ुरआन उस की तरफ़ राह दिखाता है जो सब से सीधी है।'**

बेटा, 'अक़्वम' — सब से सीधी, सब से दुरुस्त, सब से मुस्तक़िल। सिर्फ़ 'अच्छी' नहीं, बल्कि हर मामले में मौजूद रास्तों में से सब से **दुरुस्त**।

हर आदमी का रिकॉर्ड उसकी गर्दन पर

फिर सूरह इंसानों के साथ मामलात के बारे में कुछ बयान देती है, बेटा, और हर एक रुक कर सोचने लायक़ है।

'**व यद'उल्-इंसानु बिश्-शर्रि दु'आ-अहू बिल्-ख़ैर — और इंसान बुराई के लिए (वैसे ही) दुआ माँगता है जैसे भलाई के लिए — व कानल्-इंसानु 'अजूला — और इंसान हमेशा जल्दबाज़ है।'**

बेटा, हम कितनी बार उस चीज़ के लिए गिड़गिड़ाते हैं जो हमें तबाह कर देती? एक नौकरी, एक शादी, एक फ़ैसला — उसी शिद्दत से माँगा जिस से हम भलाई माँगते हैं। और आयत वजह नाम करती है: **जल्दबाज़ी।** हम इसे **अभी** चाहते हैं, उस से पहले कि हम इसे समझें।

बेटा, तो जब एक दुआ टाल दी जाए या रद्द की जाए, ग़ौर कीजिए कि **शायद वही जवाब हो।**

'**व कुल्ल इंसानिन अल्ज़म्नाहु ताइरहू फ़ी 'उनुक़िह — और हर आदमी — हमने उसका रिकॉर्ड उसी की गर्दन से बाँध दिया — व नुख़्रिजु लहू यौमल्-क़ियामति किताबंय्यल्क़ाहु मन्शूरा** — और हम उसके लिए क़ियामत के दिन एक **किताब** निकालेंगे जिसे वो **खुला हुआ** पाएगा।'

'**इक़्रअ् किताबक — अपना रिकॉर्ड पढ़ — कफ़ा बि-नफ़्सिकल्-यौम 'अलैक हसीबा — आज तू ख़ुद अपने हिसाब के लिए काफ़ी है।'**

बेटा, उस का वज़न महसूस कीजिए। कोई मुद्दई (प्रॉसिक्यूटर) नहीं, कोई गवाह नहीं — **तुम ख़ुद अपनी फ़ाइल पढ़ोगे।** कोई बहस नहीं, क्योंकि सबूत गोया तुम्हारी अपनी लिखावट में है।

'**मनिह्-तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लि-नफ़्सिह** — जो हिदायत पाए वो अपने ही लिए पाता है — **व मन ज़ल्ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु 'अलैहा** — और जो भटके वो अपने ही ख़िलाफ़ भटकता है — **व ला तज़िरु वाज़िरतुंव्-विज़्र उख़्रा** — **और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा** — **व मा कुन्ना मु'अज़्ज़िबीन हत्ता नब्'अस रसूला** — **और हम तब तक सज़ा नहीं देते जब तक एक रसूल न भेज दें।**'

बेटा, वो आख़िरी लाइन अल्लाह के इंसाफ़ के बारे में एक ऐसा बयान है जिसे बहुत से सवाल ठीक कर देने चाहिए: **किसी को उस पैग़ाम के लिए जवाब-देह नहीं ठहराया जाता जो उस तक पहुँचा ही नहीं।**

अहकाम

और अब, बेटा, हम इस सूरह के दिल तक पहुँचे — अहकाम का एक सिलसिला इतना मुकम्मल कि बहुत से उलमा ने उन्हें क़ुरआन के दस अहकाम कहा है। हर एक को धीरे पढ़िए।

'**व क़ज़ा रब्बुक अल्ला तअ्बुदू इल्ला इय्याहु** — **और तेरे रब ने फ़ैसला कर दिया कि उस के सिवा किसी की इबादत न करो** — **व बिल्-वालिदैनि इह्साना** — **और माँ-बाप से हुस्न-ए-सुलूक करो।**'

बेटा, वो जोड़ा देखिए। अल्लाह की इबादत, और माँ-बाप से भलाई — एक ही जुमले में जोड़े गए। **तख़्लीक़ में किसी और चीज़ को अल्लाह के हक़ के बग़ल में यूँ नहीं रखा गया।**

'**इम्मा यब्लुग़न्न 'इन्दकल्-किबर अहदुहुमा औ किलाहुमा** — **अगर उन में से एक या दोनों तुम्हारे पास बुढ़ापे को पहुँचें** — **फ़-ला तक़ुल्-लहुमा उफ़्फ़िन** — **तो उन्हें 'उफ़' तक मत कहो** — **व ला तन्हर्हुमा** — **और उन्हें मत झिड़को** — **व क़ुल्-लहुमा क़ौलन करीमा** — **और उनसे इज़्ज़त वाली बात कहो।**'

बेटा, 'उफ़' कोई गाली नहीं है। ये बद-ज़ुबानी या लानत नहीं। **ये झुंझलाहट की सब से छोटी मुमकिन आवाज़ है** — एक आह, एक 'च्च', वो आवाज़ जो एक थका हुआ शख़्स निकालता है जब उसे किसी चीज़ को चौथी बार दोहराने को कहा जाए।

और अल्लाह ने उसे मना कर दिया।

बेटा, सोचिए इसका मतलब क्या है। **अगर झुंझलाहट का सब से छोटा इज़हार मना है, तो उस से ऊपर हर चीज़ ना-क़ाबिल-ए-तसव्वुर है:** अपनी आवाज़ ऊँची करना, बे-सब्रा लहजा, तानेज़ाना जवाब, आँखें फेरना, सुनने का ढोंग।

और ख़ास माहौल ग़ौर कीजिए: 'जब एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँचें **तुम्हारे पास**'। ये ठीक उस सूरत पर निशाना है जहाँ सब्र सब से मुश्किल है — जब वो धीमे, दोहराने वाले, भूलने वाले, जिस्मानी तौर पर मोहताज हों, और तुम मसरूफ़ और थके हो।

'**वख़्फ़िज़ लहुमा जनाहज़्-ज़ुल्लि मिनर्-रहमह — और उन के लिए रहमत से आजिज़ी का बाज़ू झुका दे।**'

बेटा, क्या तस्वीर। **एक परिंदा अपने बच्चों को पनाह देने के लिए अपना बाज़ू झुकाता है — वही हरकत जो तुम्हारे माँ-बाप ने तुम पर की। अब तुम अपना उन पर झुकाओ।**

'**व क़ुर्-रब्बिर्-हम्हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा — और कहो: मेरे रब, उन पर रहम कर जैसे उन्होंने मुझे छोटे में पाला।**'

बेटा, ये दुआ याद कर लीजिए और रोज़ाना कहिए, ज़िंदा माँ-बाप के लिए और उन के लिए जो गुज़र गए। और उसकी मंतिक़ ग़ौर कीजिए: **आप अल्लाह से माँग रहे हैं कि वो उन के साथ वैसे पेश आएँ जैसे उन्होंने आपके साथ किया — क्योंकि आप जानते हैं आप ख़ुद इसका बदला नहीं दे सकते।**

'**रब्बुकुम अअ्लमु बिमा फ़ी नुफ़ूसिकुम — तुम्हारा रब उस से ज़्यादा जानता है जो तुम्हारे दिलों में है — इन तकूनू सालिहीन फ़-इन्नहू काना लिल्-अव्वाबीन ग़फ़ूरा** — अगर तुम नेक हो, तो वो **रुजू करने वालों के लिए बख़्शने वाला है।**'

बेटा, ये ठीक माँ-बाप की आयतों के बाद आता है — **एक रहमत हर उस शख़्स के**

लिए जो अपने माँ-बाप के साथ नाकाम रहा और इसे ठीक करना चाहता है।

'**व आति ज़ल्-क़ुर्बा हक़्क़हू वल्-मिस्कीन वब्नस्-सबील — और रिश्तेदार को उसका हक़ दो, और मोहताज और मुसाफ़िर को — व ला तुबज़्ज़िर तब्ज़ीरा — और फ़ुज़ूल-ख़र्ची मत करो — इन्नल्-मुबज़्ज़िरीन कानू इख़्वानश्-शयातीन — बेशक, फ़ुज़ूल-ख़र्च शयातीन के भाई हैं।**'

बेटा, उस की शिद्दत ग़ौर कीजिए: 'शयातीन के भाई'। क्योंकि **फ़ुज़ूल-ख़र्ची एक नेमत की तबाही है जिसकी किसी और को ज़रूरत थी।**

'**व ला तज्'अल यदक मग़्लूलतन इला 'उनुक़िक व ला तब्सुत्हा कुल्लल्-बस्त — और न अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा रखो, न उसे पूरा फैला दो — फ़-तक़्'उद मलूमम्-मह्सूरा** — वरना तुम मलामत-ज़दा और मुफ़्लिस हो कर बैठ जाओगे।'

बेटा, नाकामी की दो तस्वीरें: गर्दन से बंधा एक हाथ (वो कंजूस जो दे नहीं सकता) और पूरा खुला एक हाथ (वो जो इतना देता है कि ख़ुद तबाह हो जाए)। **मोमिन का हाथ इन दोनों के दरमियान कहीं होता है।**

'**व ला तक़्तुलू औलादकुम ख़श्यत इम्लाक़ — और अपनी औलाद को ग़ुर्बत के डर से क़त्ल मत करो — नह्नु नर्ज़ुक़ुहुम व इय्याकुम — हम उन्हें और तुम्हें रिज़्क़ देते हैं।**'

बेटा, तरतीब ग़ौर कीजिए: हम **उन्हें** और तुम्हें रिज़्क़ देते हैं। **उनका रिज़्क़ पहले ज़िक्र हुआ — ये तुम्हारे में से नहीं निकलता।**

'**व ला तक़्रबुज़्-ज़िना — और ज़िना के क़रीब मत जाओ — इन्नहू काना फ़ाहिशतंव्-व सा-अ सबीला** — बेशक, ये बे-हयाई है और बुरा रास्ता है।'

बेटा, अल्फ़ाज़ ग़ौर कीजिए: '**क़रीब** मत जाओ'। 'इसे मत करो' नहीं। क्योंकि **ये एक ऐसा गुनाह है जिस में कोई अचानक नहीं गिरता।** उस तक जाने वाला हमेशा एक रास्ता होता है — एक नज़र, एक निजी मैसेज, एक तय की गई मुलाक़ात, एक हद चुपके से हटा दी गई। और अल्लाह ने **रास्ते** को मना किया, सिर्फ़ मंज़िल को नहीं।

'**व ला तक़्तुलुन्-नफ़्सल्-लती हर्रमल्-लाहु इल्ला बिल्-हक़्क़** — और उस जान

को क़त्ल मत करो जिसे अल्लाह ने हराम किया, सिवाए हक़ के।'

'**व ला तक़्रबू मालल्-यतीमि इल्ला बिल्लती हिय अह्सनु हत्ता यब्लुग़ अशुद्दह — और यतीम के माल के क़रीब मत जाओ सिवाए उस तरीक़े से जो बेहतर है** जब तक वो अपनी पुख़्तगी को पहुँचे — **व औफ़ू बिल्-'अह्द — और अह्द पूरा करो — इन्नल्-'अह्द काना मस्ऊला — बेशक, अह्द के बारे में पूछा जाएगा।**'

बेटा, 'इन्नल्-'अह्द काना मस्ऊला' — **ख़ुद अह्द के बारे में पूछा जाएगा।** तसव्वुर कीजिए: वो वादा जो तुमने किया खड़ा होता और उस से सवाल किया जाता है।

'**व औफ़ुल्-कैल इज़ा किल्तुम व ज़िनू बिल्-क़िस्तासिल्-मुस्तक़ीम — और जब नापो तो पूरा नापो, और सीधी तराज़ू से तोलो — ज़ालिक ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला** — ये नतीजे में बेहतर और ज़्यादा मुंसिफ़ाना है।'

उस चीज़ के पीछे मत पड़ो जिसे तुम नहीं जानते

और फिर, बेटा, एक आयत आती है जो आगे भेजे गए मैसेजेस के दौर में शिद्दत से दरकार है:

'**व ला तक़्फ़ु मा लैस लक बिही 'इल्म — और उस चीज़ के पीछे मत पड़ो जिसका तुम्हें इल्म नहीं — इन्नस्-सम्'अ वल्-बसर वल्-फ़ुआद कुल्लु उलाइक काना 'अन्हु मस्ऊला — बेशक, कान, आँख और दिल — इन सब के बारे में पूछा जाएगा।**'

बेटा, 'ला तक़्फ़ु' का मतलब किसी चीज़ के निशानों के पीछे मत चलो, उसके पीछे मत लगो। तो: **जो तुमने तस्दीक़ नहीं किया उसे मत दोहराओ, गुमान पर इल्ज़ाम मत लगाओ, उस पर गवाही मत दो जो तुमने देखा नहीं, एक अफ़्वाह से किसी शख़्स के बारे में राय मत बनाओ।**

और फिर तीन आज़ा जिनसे सवाल किया जाएगा: तुम्हारे **कान** (तुमने क्या सुनने का इंतेख़ाब किया?), तुम्हारी **आँखें** (तुमने क्या देखने का इंतेख़ाब किया?), और तुम्हारा **दिल** (तुमने उस में क्या बैठने दिया — कौनसे गुमान, कौनसी रंजिशें, कौनसे अक़ीदे तुमने बिना सबूत रखे?)।

बेटा, एक ऐसे दौर में जहाँ एक झूठा दावा तुम्हारी चाय ख़त्म करने से पहले हज़ार लोगों तक पहुँच सकता है, ये एक आयत ज़ब्त (कंडक्ट) का मुकम्मल ज़ाब्ता है।

'**व ला तम्शि फ़िल्-अर्ज़ि मरहा — और ज़मीन पर इतरा कर मत चलो — इन्नक लन तख़्रिक़ल्-अर्ज़ व लन तब्लुग़ल्-जिबाल तूला — बेशक, तुम न ज़मीन को फाड़ सकते हो, न ऊँचाई में पहाड़ों को पहुँच सकते हो।**'

बेटा, ग़ुरूर फुलाने का क्या अंदाज़। तुम ज़मीन पर अकड़ते चलते हो — **तुम उसे चीर तक नहीं सकते।** तुम अपना सर ऊँचा रखते हो — **तुम एक पहाड़ी जितने ऊँचे भी नहीं।** आयत बस एक मग़्रूर आदमी को क़रीबी मौजूद चीज़ों के मुक़ाबले में नाप देती है।

और फिर अल्लाह पूरी फ़ेहरिस्त को एक ही फ़ैसले से बंद करते हैं: '**कुल्लु ज़ालिक काना सय्यिउहू 'इन्द रब्बिक मक्रूहा — ये सब — इस की बुराई — तुम्हारे रब के नज़दीक ना-पसंदीदा है।**'

बेटा, लफ़्ज़ ग़ौर कीजिए: 'मक्रूहा' — **ना-पसंद**, अल्लाह के नज़दीक मकरूह। ये महज़ एक फ़ेहरिस्त के उसूल नहीं। **इन में से हर एक वो चीज़ है जिसे तुम्हारा रब ना-पसंद करता है।** ये बदल देता है कि एक मोमिन इन से कैसे ता'ल्लुक़ रखता है।

वो कहो जो बेहतर हो

फिर सूरह बात करने के बारे में एक हिदायत देती है, बेटा, जो मुसलमानों के दरमियान ज़्यादा तर लड़ाई ख़त्म कर देती अगर हम इसे लागू करें:

'**व क़ुल लि-'इबादी यक़ूलुल्-लती हिय अह्सन — और मेरे बंदों से कहो कि वो कहें जो बेहतर है — इन्नश्-शैतान यन्ज़ग़ु बैनहुम — बेशक, शैतान उनके दरमियान फूट डालता है — इन्नश्-शैतान काना लिल्-इंसानि 'अदुव्वम्-मुबीना** — बेशक, शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: 'वो कहो जो सच है' नहीं — '**वो कहो जो बेहतर है**'। एक चीज़ बिल्कुल सच हो सकती और फिर भी कहने के लिए ग़लत चीज़ हो, या कहने का ग़लत तरीक़ा।

और दी गई वजह ग़ौर कीजिए: **शैतान अल्फ़ाज़ के दरमियान के ख़लाओं से अंदर आता है।** एक ख़ानदान में एक तीखा जुमला, एक जमाअत में एक चुभता जवाब — ये उसका मौक़ा है। उसे शायद ही लोगों को बड़े गुनाह करवाने की ज़रूरत होती है; उसे बस ये चाहिए कि **वो एक दूसरे से बुरी तरह बात करें।**

फिर सूरह मक्का वालों के मो'जिज़े के मुतालबे का जवाब देती है, और उनके अजीब चैलेंज दर्ज करती है — हमें एक चश्मा लाओ, एक बाग़, सोने का एक घर, आसमान को टुकड़ों में गिरा दो। और दिया गया जवाब: '**क़ुल सुब्हान रब्बी हल कुन्तु इल्ला बशरर्-रसूला** — कहो: मेरा रब पाक है! क्या मैं एक इंसान रसूल के सिवा कुछ था?'

और फिर अल्लाह को पुकारने के तरीक़े की एक ख़ूबसूरत तसहीह: '**क़ुलिद्-'उल्लाह अविद्-'उर्-रहमान — कहो: अल्लाह को पुकारो या अर्-रहमान को पुकारो — अय्यम्-मा तद्'ऊ फ़-लहुल्-अस्माउल्-हुस्ना — जिस नाम से भी पुकारो — उसी के सब से ख़ूबसूरत नाम हैं।**'

बेटा, कुछ ने अर्-रहमान नाम पर ए'तिराज़ किया था। और अल्लाह कहते हैं: उसके ख़ूबसूरत नामों में से जिस से भी तुम उसे पुकारो, **वो एक ही है।**

'**व ला तज्हर बि-सलातिक व ला तुख़ाफ़ित बिहा वब्तग़ि बैन ज़ालिक सबीला** — और अपनी नमाज़ में न बहुत ऊँची आवाज़ से पढ़ो, न बहुत धीमी, बल्कि उस के दरमियान एक रास्ता तलाश करो।'

शिफ़ा और रहमत

और अब, बेटा, इस किताब के बारे में एक आयत जिसे हर मोमिन को जानना चाहिए:

'**व नुनज़्ज़िलु मिनल्-क़ुरआनि मा हुव शिफ़ा-उंव्-व रहमतुल्-लिल्-मुअ्मिनीन — और हम क़ुरआन में से वो उतारते हैं जो मोमिनीन के लिए शिफ़ा और रहमत है — व ला यज़ीदुज़्-ज़ालिमीन इल्ला ख़सारा — मगर ये ज़ालिमों को घाटे के सिवा कुछ नहीं बढ़ाता।**'

बेटा, 'शिफ़ा' — **शिफ़ा**। और उलमा का नुक़्ता ग़ौर कीजिए: जिस्मों से पहले **दिलों** की शिफ़ा। ये उन बीमारियों का इलाज करता है जिन तक कोई और चीज़ नहीं पहुँच सकती — रिज़्क़ की फ़िक्र, दूसरों का हसद, ग़ुरूर, मायूसी, वो ख़ालीपन जिसे एक शख़्स नाम नहीं दे सकता।

और दूसरा हिस्सा ग़ौर कीजिए, जो होश में लाने वाला है: **वही अल्फ़ाज़ जो एक शख़्स को शिफ़ा देते हैं दूसरे को घाटे में बढ़ा देते हैं।** क़ुरआन तुम्हें वहाँ नहीं छोड़ता जहाँ तुम्हें पाया; जब तुम उस से मामला करते हो तो तुम एक या दूसरी सिम्त में बढ़ते हो।

फिर सूरह इंसानों के बारे में एक ऐसी बात ग़ौर करती है जो तकलीफ़-देह हद तक दुरुस्त है: '**व इज़ा अन्'अम्ना 'अलल्-इंसानि अअ्रज़ व ना-आ बि-जानिबिह** — और जब हम इंसान पर एहसान करते हैं, **वो मुँह मोड़ लेता है और दूर हो जाता है** — **व इज़ा मस्सहुश्-शर्रु काना यऊसा** — **और जब उसे बुराई छूती है, वो मायूस हो जाता है।**'

बेटा, ये उस शख़्स का चक्कर है जिसका अल्लाह के साथ पुख़्ता रिश्ता नहीं: **आराम में भूलने वाला, मुश्किल में ना-उम्मीद।** और मोमिन को इसे तोड़ना है — आराम में शुक्र-गुज़ार, मुश्किल में सब्र करने वाला।

'**व यस्अलूनक 'अनिर्-रूह** — **और वो तुमसे रूह के बारे में पूछते हैं** — **क़ुलिर्-रूहु मिन अम्रि रब्बी** — **कहो: रूह मेरे रब के अम्र से है** — **व मा ऊतीतुम मिनल्-'इल्मि इल्ला क़लीला** — **और तुम्हें इल्म में से सिर्फ़ थोड़ा दिया गया है।**'

बेटा, ये आयत हर उस दौर में याद रखने लायक़ है जो ख़ुद को बहुत तरक़्क़ी-याफ़्ता समझता है। **वो चीज़ जो तुम्हारे सब से क़रीब है — ये हक़ीक़त कि तुम ज़िंदा हो, कि तुम्हारे जिस्म के अंदर एक 'तुम' है — वज़ाहत से परे रहती है।** और अल्लाह का तब्सिरा क़ायम है: तुम्हें सिर्फ़ थोड़ा दिया गया है।

और फिर वो अज़ीम चैलेंज, बेटा: '**क़ुल ल-इनिज्-तम'अतिल्-इन्सु वल्-जिन्नु 'अला अंय्यअ्तू बि-मिस्लि हाज़ल्-क़ुरआनि ला यअ्तून बि-मिस्लिही व लौ काना ब'अ्ज़ुहुम लि-ब'अ्ज़िन ज़हीरा** — **कहो: अगर इंसान और जिन्न जमा हो जाएँ कि इस क़ुरआन जैसा ले आएँ, तो वो इस जैसा न ला सकेंगे, चाहे वो एक दूसरे की मदद**

करें।'

बेटा, वो चैलेंज उस ज़ुबान के अपने घर में जारी किया गया, उन सब से बड़े शायरों के सामने जिन्होंने कभी अरबी इस्तेमाल की, जिनके पास इसका जवाब देने का हर तक़ाज़ा था। **और ये तब से क़ायम है।**

एक ता'रीफ़ वाला मुक़ाम

और अब, बेटा, सूरह अपने इख़्तिताम की तरफ़ एक ऐसी हिदायत के साथ बढ़ती है जो हर उस शख़्स के लिए तोहफ़ा है जो एक भारी बोझ उठाए हुए है:

'व मिनल्-लैलि फ़-तहज्जद बिही नाफ़िलतल्-लक — और रात के एक हिस्से में, इस के साथ (क़ुरआन के साथ) नफ़ल इबादत के तौर पर नमाज़ पढ़ो — 'असा अंय्यब्'असक रब्बुक मक़ामम्-महमूदा — उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हें एक ता'रीफ़ वाले मुक़ाम पर उठाएगा।'

बेटा, 'अल-मक़ामुल-महमूद' को उलमा क़ियामत के दिन की अज़ीम शफ़ाअत के मुक़ाम के तौर पर समझते हैं, जो नबी ﷺ को अता हुआ। और ग़ौर कीजिए ये किस से जुड़ा है: **रात की नमाज़।**

और फिर एक दुआ हर आग़ाज़ और हर इख़्तिताम पर कहने के लिए, बेटा:

'व क़ुर्-रब्बि अदि्ख़ल्नी मुद्ख़ल सिदि्क़ंव्-व अख़्रिज्नी मुख़्रज सिदि्क़न — और कहो: मेरे रब, मुझे सचाई के साथ दाख़िल कर और सचाई के साथ निकाल — वज्'अल ली मिल्-लदुन्क सुल्तानन नसीरा — और मुझे अपनी तरफ़ से एक मददगार क़ुव्वत अता कर।'

बेटा, ये दुआ नबी ﷺ ने की, और उलमा इसे हिजरत से जोड़ते हैं: मक्का को उस तरह छोड़ना जो सचा हो, मदीना में उस तरह दाख़िल होना जो सचा हो। और आप इसे अपनी ज़िंदगी के हर दाख़िले और निकास के लिए कह सकते हैं — एक नई नौकरी, एक नया शहर, एक फ़ैसला जिस में दाख़िल हुए, एक बाब जो पीछे छोड़ा। **मुझे साफ़-सुथरे दाख़िल होने दो और साफ़-सुथरे निकलने दो।**

'**व क़ुल जा-अल्-हक़्क़ु व ज़हक़ल्-बातिल — और कहो: हक़ आ गया, और बातिल मिट गया — इन्नल्-बातिल काना ज़हूक़ा — बेशक, बातिल मिटने वाला ही है।**'

बेटा, नबी ﷺ ने इसे उस दिन पढ़ा जब मक्का फ़तह हुआ, जब का'बा के इर्द-गिर्द के बुत गिराए जा रहे थे।

और अल्फ़ाज़ देखिए: 'ज़हक़ल-बातिल' — बातिल **ग़ायब** हो गया, भाप बन गया, तबाह हो गया। और फिर: 'इन्नल-बातिल काना ज़हूक़ा' — **बातिल अपनी फ़ितरत से एक ऐसी चीज़ है जो मिटती है।** उस में ख़ुद का कोई ठहराव नहीं। ये सिर्फ़ तब तक ज़िंदा रहता है जब तक हक़ ग़ायब हो।

सूरह उन लोगों के बयान पर ख़त्म होती है जिन्होंने हक़ को पहचाना: '**इन्नल्-लज़ीन ऊतुल्-'इल्म मिन क़ब्लिही इज़ा युत्ला 'अलैहिम यख़िर्रून लिल्-अज़्क़ानि सुज्जदा** — बेशक, जिन्हें इस से पहले इल्म दिया गया — जब ये उन पर पढ़ा जाता है, **वो अपने चेहरों के बल सजदे में गिर पड़ते हैं — व यक़ूलून सुब्हान रब्बिना इन काना व'अ्दु रब्बिना ल-मफ़्'ऊला** — और कहते हैं: **हमारा रब पाक है! बेशक, हमारे रब का वादा पूरा होने वाला है — व यख़िर्रून लिल्-अज़्क़ानि यब्कून — और वो अपने चेहरों के बल गिर पड़ते हैं, रोते हुए — व यज़ीदुहुम ख़ुशू'आ — और ये उन्हें आजिज़ी में बढ़ा देता है।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **इल्म ने उन्हें आजिज़ी में बढ़ा दिया।** यही अस्ली इल्म की कसौटी है, हर सदी में।

और आख़िरी आयत, बेटा: '**व क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी लम यत्तख़िज़ वलदंव्-व लम यकुल्-लहू शरीकुन फ़िल्-मुल्कि व लम यकुल्-लहू वलिय्युम्-मिनज़्-ज़ुल्ल — और कहो: तारीफ़ अल्लाह के लिए, जिसने कोई बेटा नहीं लिया, और बादशाहत में उसका कोई शरीक नहीं, और कमज़ोरी की वजह से उसका कोई मददगार नहीं — व कब्बिर्हु तक्बीरा — और उस की पूरी बड़ाई बयान करो।**'

बेटा, तो वो सूरह जो '**सुब्हान**' — पाक है वो — से शुरू हुई '**कब्बिर्हु तक्बीरा**' — उस की बहुत बड़ाई बयान करो — पर ख़त्म होती है। **ये अल्लाह को उसके मुक़ाम पर रखते हुए खुलती और बंद होती है।**

और दरमियान में, बेटा, इसने आपको जीने के अहकाम दिए: सिर्फ़ उसकी इबादत करो, अपने माँ-बाप को 'उफ़' तक मत कहो, रिश्तेदार को उसका हक़ दो, ज़ाया मत करो, उस चीज़ के क़रीब मत जाओ जो गुनाह तक ले जाए, अपने वादे पूरे करो, ईमानदारी से तोलो, जो तस्दीक़ नहीं किया उसे मत दोहराओ, और एक ऐसी ज़मीन पर अकड़ कर मत चलो जिसे तुम चीर तक नहीं सकते।

यही वो दीन है जो तारीख़ की सब से मो'अज़्ज़ज़ रात की पीठ पर पहुँचाया गया।

इस सूरह से क्या सीखा

1. अपनी सब से अज़ीम रात पर उन्हें 'उसका बंदा' कहा गया — और अपने सब से मुश्किल साल के बाद उन्हें नमाज़ दी गई।

2. हम अक्सर उस चीज़ के लिए गिड़गिड़ाते हैं जो हमें नुक़सान देगी, क्योंकि हम जल्दबाज़ हैं — एक टाली गई दुआ शायद जवाब हो।

3. 'उफ़' झुंझलाहट की सब से छोटी आवाज़ है, और वो मना है — तो उस से ऊपर हर चीज़ ना-क़ाबिल-ए-तसव्वुर है।

4. रोज़ाना कहिए: 'रब्बिर्-हम्हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा।'

5. अल्लाह ने गुनाह के क़रीब जाने को मना किया, सिर्फ़ गुनाह को नहीं — क्योंकि कोई उस में अचानक नहीं गिरता।

6. तुम्हारे कान, आँख और दिल हर एक से सवाल किया जाएगा — जो तुमने तस्दीक़ नहीं किया उसे मत दोहराओ।

7. वो कहो जो बेहतर हो, सिर्फ़ वो नहीं जो सच हो — शैतान हमारे अल्फ़ाज़ के दरमियान के ख़लाओं से अंदर आता है।

रब्बि अद्ख़िल्नी मुद्ख़ल सिद्क़िंव्-व अख़्रिज्नी मुख़्रज सिद्क़िंव्-वज्'अल ली मिल्-लदुन्क सुल्तानन नसीरा। आमीन।